उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के प्रमुख उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय

हिन्दी केन्द्रीय विभाग

में

हिन्दी स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर के

ऐच्छिक पत्र के रूप में

प्रस्तुत

शोधप्रबन्ध

शोधार्थी

स्मिता कुमारी झा

हिन्दी केन्द्रीय विभाग

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर, काठमाण्डू

2076

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय

हिन्दी केन्द्रीय विभाग

कीर्तिपुर, काठमांडू

प्रमाणित किया जाता है कि ***उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के प्रमुख उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना*** शीर्षक शोधप्रबन्ध मेरे निर्देशन में इस विभाग की छात्रा स्मिता कुमारी झा ने तैयार किया है । हिन्दी स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर के ऐच्छिक पत्र के रूप में प्रस्तुत इस शोधप्रबन्ध को त्रिभुवन विश्वविद्यालय द्वारा मूल्यांकन के लिए अग्रसारित करता हूँ ।

.....

विनोदकुमार विश्वकर्मा

शोध निर्देशक

हिन्दी केन्द्रीय विभाग

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

कीर्तिपुर, काठमांडू

दिनांक : 2076/10/27

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय

हिन्दी केन्द्रीय विभाग

कीर्तिपुर, काठमांडू

स्वीकृति प्रमाण-पत्र हेतु

स्मिता कुमारी झा द्वारा

प्रस्तुत

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के प्रमुख उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना

शोधप्रबन्ध मूल्याङ्कन समिति

क्र.सं.	पद	नाम	हस्ताक्षर
1.	विभागीय प्रमुख	डॉ. संजीता वर्मा	.....
2.	शोध निर्देशक	विनोदकुमार विश्वकर्मा	.....
3.	वाह्य परीक्षक	डिल्लीराम शर्मा	.....

दिनांक :

अनुक्रमणिका

पृष्ठ

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय

शोध परिचय **1**

1. शोध शीर्षक 1

2. शोध का प्रयोजन 1

3. विषय प्रवेश 1

4.समस्या का कथन 4

5. शोध कार्य का औचित्य 5

6. शोध का उद्देश्य 8

7. पूर्व कार्य की समीक्षा 8

8. शोध अध्ययन का सीमांकन 11

9. शोध प्रविधि 11

10. शोधप्रबन्ध की प्रारंभिक रूपरेखा 12

द्वितीय अध्याय

प्रेमचन्द का व्यक्तित्व एवं कृतित्व **14**

1. जन्म 14

2. माता-पिता एवं बचपन 15

3. शिक्षा 17

4. व्यवसाय 18

5. विवाह 18

6. जीवन संघर्ष 19

6.1 पारिवारिक स्तर 19

6.2 आर्थिक स्तर 19

7. स्वभाव की विशेषताएं 20

8. रचना कर्म 21

8.1 कहानी 21

8.2 उपन्यास 22

8.2.1 सामाजिक उपन्यास 23

- सेवासदन
- वरदान
- प्रतिज्ञा
- निर्मला
- कायाकल्प
- गबन

8.2.2 राजनीतिक उपन्यास 23

- प्रेमाश्रम
- रंगभूमि
- कर्मभूमि
- गोदान
- मंगलसूत्र

8.2.3 प्रेमचन्द के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय 23

8.2.3.1 सेवासदन 23

8.2.3.2 वरदान 24

8.2.3.3 प्रतिज्ञा 24

8.2.3.4 निर्मला 24

8.2.3.5 कायाकल्प 25

8.2.3.6 गबन 25

8.2.3.7 प्रेमाश्रम 26

8.2.3.8 रंगभूमि 26

8.2.3.9 कर्मभूमि 26

8.2.3.10 गोदान 27

8.2.3.11 मंगलसूत्र 28

8.3 नाटक 28
8.4 निबंध 29
8.5 जिवनी साहित्य 29
8.6 अनुवाद 29
9. जीवन विराम 30
10. संदभ्र ग्रन्थ 31

तृतीय अध्याय

हिंदी साहित्य में नारी केंद्रित उपन्यास : विहंगावलोकन 32
1. प्रेमचन्द पूर्व युगीन उपन्यासों में नारी 33
2. प्रेमचन्द युगीन उपन्यासकारों में नारी 36
3. प्रेमचन्दोत्तर युगीन उपन्यासों में नारी 38
4. सन्दर्भ ग्रन्थ 40

चतुर्थ अध्याय

प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी संवेदना 41
1. सेवासदन में चित्रित नारी संवेदना 43
2. निर्मला में चित्रित नारी संवेदना 51
3. वरदान में चित्रित नारी संवेदना 57
4. गोदान में चित्रित नारी संवेदना 64
5. सन्दर्भ ग्रन्थ 73

पंचम अध्याय

उपसंहार 75

सन्दर्भ-ग्रन्थों की सूची 80

प्राक्कथन

यह शोधप्रबन्ध त्रिभुवन विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम अनुसार मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय अन्तर्गत हिन्दी विषय में स्नातकोत्तर उपाधि की आंशिक आवश्यकता की परिपूर्ति करने के लिए प्रस्तुत किया गया है ।

प्रेमचन्द के हिन्दी-कथा-साहित्य में पदार्पण करते ही भारतीय उपन्यास का एक नया युग प्रारम्भ हो जाता है, जिसकी सर्वमुख्य विशेषता जीवन के प्रति ईमानदारी है । प्रेमचन्द से पूर्व हिन्दी उपन्यास में समाज निरपेक्ष कल्पना का अतिरंजित आलोक उत्सुक पाठक की निर्बल दृष्टि को चमत्कृत करने मात्र का उत्तरदायित्व निबाहता था । परन्तु प्रेमचन्द की कला सजग पाठक को वास्तविक जीवन के समक्ष ले जाकर उसके प्रति अनुराग को जगाती है और उसे दिशा निर्धारण में उत्साहित करती हुई क्रियाशील बना देती है ।

प्रेमचन्द ने तद्युगीन सामाजिक और राजनीतिक विषमताओं को गम्भीरता से महसूस किया और उसे अपने साहित्य की माध्यम से भारत की पीड़ित जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया । उन्होंने साहित्य की उपयोगिता के आधार पर प्रस्तुत कर समाज में नवीन चेतना लाने का प्रयत्न किया । इसलिए उनके चरित्र मानवता, दया, प्रेम, विश्व बन्धुत्व की भावना से परिपूर्ण दिखाई देते हैं ।

युग की परिस्थितियाँ ही साहित्यकार एवं साहित्य को उत्पन्न करती हैं । साहित्यकार केवल साहित्य का चित्रण ही नहीं करता, बल्कि समाज और उस समय के वातावरण से प्रभावित होकर साहित्य रचना करता है । प्रेमचन्द जैसे प्रगतिशील और जनचेतना के प्रतीक साहित्यकार का पूरा साहित्य समाज और उसकी यथार्थता को प्रस्तुत करता है । उनके साहित्य के चरित्र थोथी कल्पनाओं से न बनकर वर्तमान की यथार्थ परिस्थिति से निर्मित थे ।

प्रेमचन्द अपनी औपन्यासिक यात्रा के प्रारंभिक दौर से ही मानवता रहे । उनके मानवतावादी दृष्टिकोण जन सामान्य के प्रति समर्पित हुआ है और इंसानी सरोकार की भूमिका निभाता है । उनका प्रगतिशील दृष्टिकोण तिरस्कृत और उपेक्षितों के उन्नयन के साथ कर्मशील जिन्दगी का सार्थक है । प्रेमचन्द साहित्य की जमीन समसामयिक स्थितियों

का गहराई में स्पर्श करती है । प्रेमचन्द साहित्य को प्रश्रय देने वाली प्रत्येक विचारधारा को आधार बनाकर निर्मित है, चाहे वह मार्क्सवाद हो या गांधीवाद । मानव जीवन के विभिन्न परिवेशों को प्रस्तुत करते हुए उनके बीच मानव की समस्याओं का विश्लेषण करने वाले प्रेमचन्द की मानववादी दृष्टि को विकसित करने में पूर्वी ओर पश्चिमी विचारकों और बौद्धिक एवं वैज्ञानिक विचारधाराओं का बड़ा हाथ है । लेकिन वे किसी भी विचारधारा के सैद्धान्तिक प्रवक्ता के रूप में प्रकट नहीं हुए । मानवतावादी चेतना से दीप्त होने के कारण उनकी प्रगतिशील दृष्टि यथार्थवाद को निर्विकल्प रूप में स्वीकार करती है, सोद्देश्यता तथा सामाजिक उपादेयता को महत्व देने वाली हर विचारधारा को अपने वृत में समाविष्ट कर लेती है ।

वैसे पहले से ही अन्य उपन्यासकारों की अपेक्षा प्रेमचन्द के उपन्यासों के प्रति मेरी विशेष रूचि रही है । उनके 'निर्मला' उपन्यास ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया । उसे पढ़ने के पश्चात् शायद पहली बार एक नारी के दुःख, दर्द, उसकी पीड़ा, उसकी कुंठाग्रस्त स्थिति आदि से उतने व्यापक रूप से परिचित हो सकी थी और इसलिए उसी समय मैं यह तय कर चुकी थी कि भविष्य में एक नारी के प्रति उस समाज ने जो-जो अन्याय किए हैं, उनसे जुड़ें हुए पहलुओं पर कोई न काई शोध कार्य अवश्य करुंगी ।

प्रेमचन्द साहित्य का विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात् मुझे अनुभूति हुई कि उनके उपन्यासों में नारियों के प्रति उनका दृष्टिकोण काफी व्यापक रहा । नारियों के प्रति उन्हें विशेष सहानुभूति थी । इसीलिए प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्य को लेकर ही शोध कार्य करने की इच्छा हुई । अतः मैंने अपने इस लघुशोध कार्य का विषय 'उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के प्रमुख उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना' चयन कर अपने शोधप्रबन्ध को शीर्षक दिया *उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के प्रमुख उपन्यासों में चित्रित नारी संवदेना ।* हालाँकि प्रेमचन्द के कई उपन्यासों में नारी के ऊपर वर्णन है । समज द्वारा नारी के प्रति दृष्टिकोण तथा नारी का समाज पर प्रभाव का वर्णन है फिर भी मैं यहाँ उन चार प्रमुख उपन्यासों (निर्मला, सेवासदन, वरदान, गोदान) को ही लेना चाहती हूँ जिनमें नारी संवेदना पर ज्यादा जिक्र हुआ है ।

इस अनुसन्धान कार्य के दौरान मुझे अनेक महानुभावों से प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ, जिनके प्रति आभार प्रदर्शित करने में अपना परम कर्तव्य समझती हूँ ।

यह मेरा परम सौभाग्य रहा है कि मुझे वंदनीय गुरूवर्य श्री विनोदकुमार विश्वकर्मा के निर्देशन में लघुशोध करने का सुअवसर प्राप्त हुआ, जिन्होंने अपने समय की व्यस्तता के बावजूद मुझे निरंतर प्रोत्साहित किया । साथ ही उनका साथ-सहयोग एवं उनका आत्मीय व्यवहार सदा मेरे लिए प्रेरणा स्रोत रहा । उनके सहकार तथा मार्गदर्शन के अभाव में कदाचित मेरा यह लघुशोध कार्य पूर्ण ही न हो पाता । इसके साथ–साथ अपने विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ.संजीता वर्मा की भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने समय–समय पर मुझे मार्गदर्शन देकर प्रोत्साहित किया ।

अपने परिवार–जन के साथ-सहयोग के अभाव में यह अनुसन्धान कार्य असंभव ही था । अतः मैं अपने पिता प्रो. श्री उमेश कुमार झा एवं माता श्रीमती नविना झा के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे तन, मन व धन से सहयोग प्रदान किया और मेरा विश्वास तथा मनोबल बनाए रखा । इसके साथ मैं अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री कल्याण जी झा एवं भाभी श्रीमती प्रीति झा के प्रति हृदय से आभारी रहूँगी । इसी क्रम में उन सभी साहित्यकारों तथा समीक्षकों के प्रति नतमस्तक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिनकी कृतियों से मैंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहायता एवं विचारोत्तेजना प्राप्त की । इस कार्य को सुव्यवस्थित रूप से टंकनबद्ध करने में सुजाता जी की भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य को समय पर टंकनबद्ध करके पूर्णता प्रदान की ।

संसार का कोई भी मनुष्य सर्वथा दोषों से मुक्त नहीं हो सकता । अतः वह जो भी कार्य करता है, उसमें कोई न कोई त्रुटि अवश्य रह ही जाती है । प्रस्तुत लघुशोध में मैंने उन त्रुटियों से बचने की कोशिश अवश्य की है, फिर भी अगर इसमें कोई कमी या त्रुटि नजर आए तो उसके लिए मैं क्षमा प्राथी हूँ । प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा मेरी यह कोशिश अवश्य रही है कि मेरे बाद आने वाले शोधार्थियों को यह शोध कार्य पसंद आए और भविष्य में होने वाले अनुसन्धान कार्यों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके । अब तो यह फैसला सुधि जनों पर ही निर्भर करता है कि मैं अपने उस प्रयास में कहाँ तक सफल हो सकी हूँ ।

शोधार्थी

स्मिता कुमारी झा